अंक-3

स्वास्थ्य आपके द्वार...

मासिक न्यूज़लेटर | मार्च, 2026

अपर मुख्य सचिव की कलम से...

प्रिय साथियों,

राष्ट्रीय स्वास्थ्य मिशन, उत्तर प्रदेश के अंतर्गत प्रकाशित मासिक पत्रिका 'स्वास्थ्य आपके द्वार' के इस विशेष अंक में संचारी रोग नियंत्रण एवं दस्तक अभियान तथा 24 मार्च- विश्व क्षय रोग दिवस के महत्वपूर्ण विषयों को समाहित किया गया है।

विश्व क्षय रोग दिवस हमें यह संकल्प लेने का अवसर प्रदान करता है कि हम टीबी जैसी गंभीर बीमारी को जड़ से समाप्त करने के लिए सामूहिक प्रयास करें। समय पर जांच, नियमित उपचार एवं जनजागरूकता के माध्यम से ही टीबी मुक्त समाज का लक्ष्य प्राप्त किया जा सकता है।

इस वर्ष हम सभी का यह संकल्प होना चाहिए कि वर्ष 2027 तक 'क्षय रोग मुक्त भारत' के राष्ट्रीय लक्ष्य को पूर्ण करने में उत्तर प्रदेश अग्रणी भूमिका निभाए। 'प्रधानमंत्री क्षय-रोग मुक्त भारत अभियान' के तहत निक्षय पोषण योजना, निक्षय मित्र एवं सामुदायिक सहभागिता के माध्यम से हम क्षय रोगियों को पोषण, सहयोग एवं उपचार प्रदान कर रहे हैं।

उत्तर प्रदेश सरकार संचारी रोगों के नियंत्रण एवं जन-जन तक स्वास्थ्य सेवाएँ पहुँचाने हेतु सदैव प्रतिबद्ध है। प्रदेश सरकार द्वारा संचालित 'विशेष संचारी रोग नियंत्रण एवं दस्तक अभियान' इस दिशा में एक महत्त्वपूर्ण पहल है, जिसके माध्यम से स्वास्थ्य कर्मी घर-घर जाकर डेंगू, मलेरिया, कालाज़ार, जापानी इन्सेफेलाइटिस एवं अन्य संचारी रोगों की निगरानी, पहचान एवं उपचार सुनिश्चित कर रहे हैं। यह अभियान न केवल रोगों के प्रसार को रोकने में सहायक है, बल्कि आमजन में स्वास्थ्य के प्रति जागरूकता भी बढ़ा रहा है।

मैं, प्रदेश के समस्त स्वास्थ्य कर्मियों, आशा, एएनएम, आंगनवाड़ी कार्यकत्रियों एवं चिकित्सा अधिकारियों का हार्दिक अभिनंदन करता हूँ, जो विषम परिस्थितियों में भी निरंतर जनसेवा में संलग्न हैं, स्वास्थ्य अभियानों की सफलता उनके समर्पण एवं अथक परिश्रम का प्रमाण है।

मैं जनसामान्य से भी आग्रह करता हूँ कि वे स्वच्छता अपनाएँ, जलभराव न होने दें, मच्छरदानी का उपयोग करें और क्षय रोग के लक्षण दिखने पर तुरंत निकटवर्ती सरकारी स्वास्थ्य केंद्र पर जाँच कराएँ। याद रखें- ''क्षय रोग लाइलाज नहीं, पूरा इलाज कराएँ, रोग से मुक्ति पाएँ।''

आइए, हम सब मिलकर एक स्वस्थ, रोगमुक्त और समृद्ध उत्तर प्रदेश के निर्माण में अपना योगदान दें।

अमित कुमार घोष आई.ए.एस.
अपर मुख्य सचिव
चिकित्सा स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण विभाग
व चिकित्सा शिक्षा विभाग, उ.प्र.

मिशन निदेशक की कलम से...

प्रिय साथियों,

राष्ट्रीय स्वास्थ्य मिशन, उत्तर प्रदेश के अंतर्गत प्रकाशित मासिक पत्रिका **"स्वास्थ्य आपके द्वार"** का यह अंक जनस्वास्थ्य से जुड़े अत्यंत महत्वपूर्ण विषयों **"विशेष संचारी रोग नियंत्रण एवं दस्तक अभियान"** तथा **"विश्व क्षय रोग दिवस"** पर केंद्रित है। यह पहल जनस्वास्थ्य के प्रति सरकार की प्रतिबद्धता और दूरदर्शिता को स्पष्ट रूप से प्रदर्शित करती है।

विश्व क्षय रोग दिवस के अवसर पर हम सभी ने पुनः यह संकल्प लिया है कि टीबी उन्मूलन के लक्ष्य को प्राप्त करने हेतु मिलकर कार्य करें। टीबी की रोकथाम के लिए जागरूकता, समय पर जांच, पूर्ण एवं नियमित उपचार अत्यंत आवश्यक हैं। यदि परिवार में किसी सदस्य को क्षय रोग है, तो अन्य सदस्यों की जांच कराना अनिवार्य है। चिकित्सकीय परामर्श के अनुसार, रोग की पुष्टि होने पर उपचार एवं नकारात्मक पाए जाने पर टीबी प्रिवेंटिव थेरेपी (टी.पी.टी.) सुनिश्चित कर हम टीबी मुक्त उत्तर प्रदेश के लक्ष्य प्राप्ति की ओर अग्रसर हो सकते हैं।

प्रदेश में **निक्षय पोषण योजना** के माध्यम से रोगियों को पोषण सहायता, **निक्षय मित्र** कार्यक्रम के अंतर्गत सामाजिक सहयोग, तथा **डॉट्स पद्धति** द्वारा पूर्ण उपचार सुनिश्चित किया जा रहा है। मैं समाज के सभी वर्गों से अपील करती हूं कि वे स्वयं आगे आकर "निक्षय मित्र" बनें तथा दूसरों को भी इसके लिए प्रेरित करें, ताकि इस अभियान को जन-आंदोलन का रूप दिया जा सके। जन समुदाय की सक्रिय भागीदारी इस अभियान की सबसे बड़ी शक्ति है। **विश्व क्षय रोग दिवस** हमें यह स्मरण कराता है कि क्षय रोग आज भी एक गंभीर सार्वजनिक स्वास्थ्य चुनौती है।

इसी प्रकार, **विशेष संचारी रोग नियंत्रण एवं दस्तक अभियान** प्रदेश में मौसमी एवं संक्रामक रोगों की रोकथाम के लिए एक प्रभावी और एक सशक्त माध्यम के रूप में कार्य कर रहा हैं। आशा, ए.एन.एम. एवं अन्य स्वास्थ्यकर्मी घर-घर जाकर डेंगू, मलेरिया, कालाजार, फाइलेरिया, चिकनगुनिया एवं जापानी इंसेफेलाइटिस जैसे रोगों के प्रति जागरूकता फैला रहे हैं तथा संभावित रोगियों की पहचान कर उन्हें आवश्यक स्वास्थ्य सेवाएं उपलब्ध करा रहे हैं। यह अभियान विशेष रूप से ग्रामीण एवं दूरस्थ क्षेत्रों में स्वास्थ्य सेवाओं की पहुंच को सुदृढ़ बना रहा है।

मैं प्रदेश के समस्त नागरिकों एवं जनप्रतिनिधियों से हार्दिक अपील करती हूं कि वे इन जनस्वास्थ्य अभियानों में सक्रिय भागीदारी निभाएं। अपने-अपने क्षेत्र में स्वच्छता, जागरूकता एवं समय पर उपचार को बढ़ावा दें तथा अधिक से अधिक लोगों को इन अभियानों से जोड़ने का प्रयास करें।

साथ ही, मैं समस्त स्वास्थ्य कर्मियों से अपेक्षा करती हूं कि वह इन अभियानों की सफलता के लिए अपना पूर्ण सहयोग प्रदान करें। आपका समर्पण ही इन अभियानों की सबसे बड़ी शक्ति है।

आइए, हम सभी मिलकर स्वच्छता, जागरूकता और संक्रमण से बचाव को अपने जीवन का अभिन्न अंग बनाते हुए एक रोगमुक्त, स्वस्थ और सशक्त उत्तर प्रदेश के निर्माण का संकल्प लें।

क्षय रोग लाइलाज नहीं, पूरा इलाज कराएँ, रोग से मुक्ति पाएँ।

डॉ. पिंकी जोवल आई.ए.एस.
मिशन निदेशक
राष्ट्रीय स्वास्थ्य मिशन, उ.प्र.
व सचिव, चिकित्सा स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण विभाग, उ.प्र.

उत्तर प्रदेश में संचारी रोग नियंत्रण अभियान से बड़ी सफलता, दिमागी बुखार समेत कई रोगों पर प्रभावी नियंत्रण

उत्तर प्रदेश सरकार द्वारा जापानी इंसेफेलाइटिस (दिमागी बुखार) जैसे गंभीर रोगों पर नियंत्रण, उनकी जांच एवं त्वरित उपचार हेतु आवश्यक सुविधाएं उपलब्ध कराना सर्वोच्च प्राथमिकताओं में शामिल किया गया है। संक्रामक रोगों की रोकथाम, बचाव एवं उपचार के लिए स्वास्थ्य विभाग द्वारा वर्ष 2018 से सुनियोजित कार्ययोजना के तहत लगातार प्रयास किए जा रहे हैं। मुख्य सचिव, उत्तर प्रदेश शासन द्वारा जारी शासनादेश के अनुसार स्वास्थ्य विभाग के नेतृत्व में नगर विकास, ग्राम विकास, पंचायतीराज, चिकित्सा शिक्षा, सूचना, शिक्षा, कृषि, पशुपालन एवं महिला एवं बाल कल्याण विभाग सहित विभिन्न विभागों के समन्वय से प्रत्येक वर्ष तीन चरणों-अप्रैल, जुलाई एवं अक्टूबर में एक-एक माह का विशेष संचारी रोग नियंत्रण अभियान संचालित किया जाता है। इस अभियान के तहत विभिन्न विभाग मिलकर व्यापक स्तर पर गतिविधियां संचालित करते हैं। शिक्षा विभाग द्वारा स्कूल रैलियों का आयोजन किया जाता है, वहीं ग्राम विकास विभाग द्वारा ग्राम प्रधानों की अध्यक्षता में बैठकों एवं प्रभात फेरियों का आयोजन किया जाता है। इसके साथ ही ग्राम स्वास्थ्य, पोषण एवं स्वच्छता समितियों की बैठकें आयोजित की जाती हैं।

ग्रामीण क्षेत्रों में नाले-नालियों की सफाई, खरपतवार की कटाई, हैंडपंप एवं उनके प्लेटफॉर्म की मरम्मत तथा उथले हैंडपंपों का चिन्हीकरण किया जाता है। स्वच्छ भारत मिशन के अंतर्गत शौचालय निर्माण को बढ़ावा

दिया जाता है, जबकि नगर विकास विभाग द्वारा शहरी क्षेत्रों में साफ-सफाई और फॉगिंग कराई जाती है। पशुपालन विभाग द्वारा सूकर पालकों को जागरूक किया जाता है और कृषि विभाग द्वारा चूहों एवं छछूंदर जैसे रोडेंट्स के नियंत्रण हेतु संवेदीकरण बैठकें आयोजित की जाती हैं।

विशेष संचारी रोग नियंत्रण अभियान के दौरान 15 से 20 दिनों का 'दस्तक अभियान' भी चलाया जाता है। इस दौरान आशा कार्यकत्रियां घर-घर जाकर लोगों को संचारी रोगों के प्रति जागरूक करती हैं। गृह भ्रमण के दौरान यदि किसी व्यक्ति में रोग के लक्षण पाए जाते हैं, तो उसे तत्काल नजदीकी स्वास्थ्य केंद्र में उपचार हेतु रेफर किया जाता है।

विभिन्न विभागों के समन्वित प्रयासों का सकारात्मक परिणाम सामने आया है। इन अभियानों के माध्यम से प्रदेश को दिमागी बुखार के अभिशाप से काफी हद तक मुक्ति मिली है, साथ ही डेंगू, मलेरिया और चिकनगुनिया जैसे रोगों पर भी प्रभावी नियंत्रण स्थापित किया गया है। इसके चलते प्रदेश में संचारी रोगों के प्रकोप (आउटब्रेक्स) में वर्ष दर वर्ष कमी दर्ज की गई है।

कैलेंडर वर्ष 2017 की तुलना में वर्ष 2025 तक एईएस/जेई नियंत्रण गतिविधियों में उल्लेखनीय उपलब्धियां प्राप्त हुई हैं। एईएस रोगियों की संख्या में 85 प्रतिशत, मृत्यु में 99 प्रतिशत तथा रोग मृत्युदर में 94 प्रतिशत की कमी दर्ज की गई है। वहीं जेई रोगियों की संख्या में 91 प्रतिशत, मृत्यु में 98 प्रतिशत तथा रोग मृत्युदर में 76 प्रतिशत की कमी आई है।

प्रदेश सरकार के इन सतत एवं समन्वित प्रयासों ने संचारी रोगों की रोकथाम और नियंत्रण के क्षेत्र में एक प्रभावी मॉडल प्रस्तुत किया है, जिससे संचारी रोगों पर नियंत्रण की दिशा में उल्लेखनीय सफलता प्राप्त हुई है।

खुद को टीबी मुक्त कर अब दूसरों के लिए उम्मीद बनीं वाराणसी की ज्योति

वाराणसी की ज्योति सिंह की कहानी हिम्मत और सेवा की मिसाल है। कभी खुद टीबी से जूझ चुकीं ज्योति आज मरीजों के लिए सहारा बन गई हैं। पिछले चार वर्षों में वह दो हजार से अधिक टीबी मरीजों को इलाज पूरा करने और दवा के दुष्प्रभावों से निपटने के तरीके समझा चुकी हैं। पुआरीकलां गांव की रहने वाली ज्योति को 2021 में लगातार खांसी के बाद टीबी का पता चला। शुरुआत में वह डर गईं और सामाजिक झिझक के कारण खुद को घर तक सीमित कर लिया। लेकिन पिता, पति और स्वास्थ्यकर्मियों के सहयोग से उन्हें हिम्मत मिली। छह महीने तक नियमित इलाज कर वह पूरी तरह ठीक हो गईं। लेकिन ज्योति ने यह प्रण किया कि जिस डर और सामाजिक झिझक के चलते उनको जिन समस्याओं का सामना करना पड़ा, कोई और व्यक्ति ऐसी कठिनाई न झेले। 2022 में 'टीबी चैंपियन' बनने के बाद से वह लोगों को सकारात्मक व्यवहार अपनाने के लिए प्रेरित कर रही हैं।

विश्व क्षय रोग (टीबी) दिवस 2026 विशेष : जन मानस में टीबी से बचाव व देखभाल की दिशा में अग्रसर उत्तर प्रदेश

टीबी (क्षय रोग) एक संक्रामक बीमारी है, यह मुख्य रूप से फेफड़ों को प्रभावित करती है, हालांकि शरीर के अन्य अंगों को भी प्रभावित कर सकती है। यह बीमारी संक्रमित व्यक्ति के खांसने पर हवा के माध्यम से फैलती है। लगातार दो सप्ताह से अधिक खांसी रहना, बुखार आना, रात में पसीना आना, वजन कम होना और थकान महसूस होना इसके प्रमुख लक्षण हैं। यदि समय पर इसकी पहचान कर ली जाए और उपचार शुरू किया जाए, तो टीबी की बीमारी पूरी तरह से ठीक हो सकती है।

उत्तर प्रदेश में टीबी की जांच की सुविधाएं व दवाइयां आपके नजदीकी स्वास्थ्य केन्द्रों-आयुष्मान आरोग्य मंदिर, प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र, सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र तथा जिला अस्पतालों और चिकित्सा महाविद्यालयों (मेडिकल कॉलेज) में निःशुल्क उपलब्ध हैं, जिससे मरीजों को समय पर जांच और उपचार की सुविधा मिल सके।

भारत में वर्ष 2025 में लगभग 26 लाख टीबी मामलों की पहचान की गई, जिनमें से लगभग 7.09 लाख (लगभग 25 प्रतिशत) मामले उत्तर प्रदेश से सामने आए। टीबी की रोकथाम और नियंत्रण के लिए राज्य में जोखिम वाली (वल्नरेबल) आबादी की पहचान और उनकी नियमित स्क्रीनिंग पर विशेष जोर दिया जा रहा है।

जोखिम वाली आबादी में कुपोषित व्यक्ति, मधुमेह एवं एचआईवी से संक्रमित व्यक्ति, बुजुर्ग (60 वर्ष से अधिक आयु के लोग), प्रवासी मजदूर, खनन क्षेत्रों में कार्यरत श्रमिक, कारागारों, आवासीय विद्यालयों या

आश्रय गृहों में रहने वाले लोग तथा घनी आबादी वाले क्षेत्रों में रहने वाले समुदाय शामिल हैं। इन समूहों में संक्रमण का खतरा अधिक होता है, इसलिए समय पर स्क्रीनिंग और जांच के माध्यम से टीबी के संभावित मरीजों की पहचान कर उन्हें उपचार से जोड़ना टीबी उन्मूलन की दिशा में महत्वपूर्ण कदम है।

राज्य में स्क्रीनिंग और जांच की प्रक्रिया को और सुदृढ़ बनाने के लिए आधुनिक तकनीकों का भी उपयोग किया जा रहा है। घर-घर जाकर लक्षणों वाले मरीजों की पहचान, सामुदायिक स्वास्थ्य शिविर में आये लक्षण वाले मरीजों का डिजिटल एक्स-रे तथा बलगम की जांच नाट मशीनों के माध्यम से टीबी के संभावित मरीजों को चिन्हित करने में किया जाता है।

उत्तर प्रदेश में एक्स-रे मशीनों को आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस से जोड़ा गया है, जो एक्स-रे फिल्म का त्वरित विश्लेषण कर संभावित टीबी मरीज की पहचान करने में चिकित्सकों के द्वारा कन्फर्म की जाती है। यह तकनीक विशेष रूप से लक्षण-रहित (Asymptomatic) मामलों की पहचान में उपयोगी साबित हो रही है, जिससे समय पर संदिग्ध व्यक्तियों के बलगम के सैंपल को मॉलिक्यूलर जांच (नाट जांच) के लिए भेजा जा सके और जल्द उपचार शुरू किया जा सके।

टीबी के लक्षण

1. लगातार दो हफ्ते तक खांसी

2. बुखार आना

3. भूख न लगना

4. वजन का तेजी से कम होना

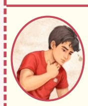
5. थकान और कमजोरी महसूस होना

6. सीने में दर्द

7. सांस लेने में तकलीफ होना

8. रात को पसीना आना

9. थूक में खून आना

10. शरीर के किसी भी भाग में गांठ होना

टीबी मरीजों की बेहतर देखभाल और पोषण सहायता प्रदान करने के लिए भारत सरकार के टीबी मुक्त भारत अभियान के अंतर्गत कई प्रावधान किए गए हैं। सरकारी स्वास्थ्य संस्थानों में टीबी की जांच और उपचार पूरी तरह निःशुल्क उपलब्ध है। इसके साथ ही निःक्षय पोषण योजना (NPY) के तहत टीबी मरीजों को पोषण सहायता के लिए आर्थिक सहयोग दिया जाता है।

मरीज के निक्षय पोर्टल पर चिन्हित होने पर ₹3000 की पहली किस्त प्रदान की जाती है, और उपचार शुरू होने के 84 दिन पूरे होने पर ₹3000 की दूसरी किस्त दी जाती है। यदि उपचार अवधि आगे बढ़ती है, तो अतिरिक्त उपचार अवधि के दौरान प्रत्येक महीने ₹1000 की सहायता राशि प्रदान की जाती है। इस सहायता का उद्देश्य यह सुनिश्चित करना है कि मरीज उपचार के दौरान पर्याप्त पोषण प्राप्त कर सके।

टीबी उन्मूलन के प्रयासों में फ्रंटलाइन स्वास्थ्य कार्यकर्ताओं की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण है। आशा, आंगनवाड़ी, टीबी चैम्पियन, एएनएम, सामुदायिक स्वास्थ्य अधिकारी और अन्य स्वास्थ्य कर्मी समुदाय में टीबी के लक्षणों वाले मरीज की पहचान करने, लोगों को जांच के लिए प्रेरित करने और मरीजों को उपचार से जोड़ने में अग्रिम पंक्ति में कार्य कर रहे हैं। वे मरीजों को नियमित रूप से दवाएं लेने के लिए प्रेरित करते हैं और समुदाय में टीबी के प्रति जागरूकता फैलाते हैं।

इसी सामूहिक प्रयास का परिणाम है कि 100-दिवसीय टीबी अभियान में उत्कृष्ट प्रदर्शन के लिए उत्तर प्रदेश को केंद्रीय टीबी प्रभाग, स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा मार्च 2025 में प्रशंसा प्रमाण पत्र प्रदान किया गया। साथ ही, कई निजी क्षेत्रों के संस्थानों और विभिन्न क्षेत्रों से जनभागीदारी के माध्यम से टीबी मरीजों को पोषण किट वितरित कर उनका सहयोग किया जाता है, जिससे उपचार के दौरान मरीजों को आवश्यक पोषण और सामाजिक समर्थन मिल सके।

उत्तर प्रदेश जनभागीदारी के प्रयासों से टीबी देखभाल को मजबूत करते हुए टीबी मुक्त भारत के लक्ष्य की दिशा में निरंतर आगे बढ़ रहा है।

जोखिम वाली जनसंख्या

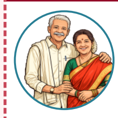
60 वर्ष से अधिक आयु के व्यक्ति

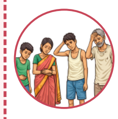
18.5 से कम (बीएमआई वाली) कुपोषित जनसंख्या

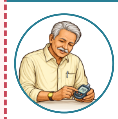
मधुमेह रोगी

धूम्रपान

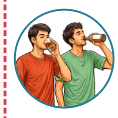
शराब एवं नशा करने वाले

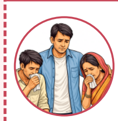
इलाज प्राप्त कर रहे टीबी रोगियों के साथ रहने वाले

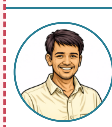
इलाज पूरा कर चुके टीबी रोगी

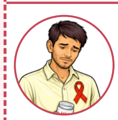
एच.आई.वी. ग्रसित व्यक्ति

वृद्धाश्रम एवं अनाथालय, निर्माणाधीन भवन ईंट भट्ठे, कारागार

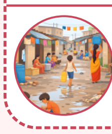
मलिन बस्ती

निःक्षय मित्र पहल भारत सरकार के राष्ट्रीय क्षय उन्मूलन कार्यक्रम के तहत शुरू की गई एक महत्वपूर्ण जनभागीदारी पहल है, जिसके तहत व्यक्ति या संस्थाएँ टीबी मरीजों को गोद लेकर उन्हें पोषण, देखभाल और उपचार में सहयोग प्रदान करती हैं। निक्षय मित्र बनने हेतु इस QR कोड को स्कैन करें :

निःक्षय मित्र के पंजीकरण हेतु
Ni-kshay

विश्व क्षय रोग (टीबी) दिवस 2026 : जनभागीदारी से टीबी मुक्त उत्तर प्रदेश

हर वर्ष 24 मार्च को पूरे विश्व में वर्ल्ड टीबी डे मनाया जाता है, जिसका उद्देश्य टीबी के प्रति जागरूकता बढ़ाना और इसके उन्मूलन के लिए सामूहिक प्रयासों को तेज करना है। इस वर्ष 2026 की थीम ***"Yes We Can End TB: Led by Bharat, Powered by Janbhagidari"*** है, जो यह संदेश देता है कि मजबूत राजनीतिक प्रतिबद्धता, नवाचार और समुदाय की सक्रिय भागीदारी के माध्यम से टीबी का अंत संभव है। यह थीम सरकारों, स्वास्थ्य प्रणालियों, समुदायों और साझेदार संगठनों के संयुक्त प्रयासों को प्रोत्साहित करती है, ताकि हर व्यक्ति तक समय पर जांच, उपचार और देखभाल की सुविधा पहुंच सके।

इसी क्रम में उत्तर प्रदेश में टीबी उन्मूलन के लिए जनभागीदारी को मजबूत किया जा रहा है। 24 मार्च 2026 को विश्व क्षय दिवस के अवसर पर राज्य में कई ग्राम पंचायतों को "टीबी मुक्त पंचायत" घोषित किया जाएगा। इस उपलब्धि में पंचायत स्तर पर सक्रिय भूमिका निभाने वाले ग्राम प्रधानों एवं समुदाय के प्रतिनिधियों को जिले स्तर पर सम्मानित किया जाएगा। यह पहल न केवल पंचायतों को टीबी उन्मूलन के लक्ष्य से जोड़ती है, बल्कि समुदाय में जागरूकता बढ़ाने और लोगों को जांच व उपचार के लिए आगे आने के लिए भी प्रेरित करती है।

टीबी मुक्त पंचायत की दिशा में ग्राम स्तर पर नियमित स्क्रीनिंग, संदिग्ध मामलों की समय पर जांच, उपचार का पूर्ण पालन, पोषण सहायता तथा समुदाय में जागरूकता जैसे कई प्रयास किए जा रहे हैं। पंचायत प्रतिनिधि, स्वास्थ्य कार्यकर्ता और स्थानीय समुदाय मिलकर यह सुनिश्चित कर रहे हैं कि कोई भी टीबी का संभावित मरीज जांच और उपचार से वंचित न रहे।

इस प्रकार जनभागीदारी, स्थानीय नेतृत्व और स्वास्थ्य प्रणाली के संयुक्त प्रयासों से उत्तर प्रदेश टीबी मुक्त भारत के लक्ष्य की ओर निरंतर आगे बढ़ रहा है, जहां हर पंचायत, हर समुदाय और हर नागरिक इस अभियान का महत्वपूर्ण भागीदार बन रहा है।

विश्व टीबी दिवस 2026

जन-जन का रखे ध्यान, TB-मुक्त भारत अभियान

जनभागीदारी से टीबी मुक्त उत्तर प्रदेश

टीबी हारेगी, देश जीतेगा
समय पर जांच और पूरा इलाज ही बचाव है।

टीबी उन्मूलन में जनभागीदारी की भूमिका

जनभागीदारी के उत्कृष्ट प्रयासों से 100-दिवसीय टीबी अभियान में विशेष सहयोग प्रदान किया गया। उत्तर प्रदेश के सभी जिलों में सामुदायिक भागीदारी से जुड़े प्रयास लगातार मजबूत हो रहे हैं, जिसका प्रभाव विशेष रूप से पिछले वर्ष आयोजित 100-दिवसीय टीबी अभियान के दौरान स्पष्ट रूप से देखा गया।

इन पहलों में सांसद, विधायक, क्षेत्रीय नेता, धार्मिक नेता, युवा समूह, महिला समूह, टीबी चैंपियन तथा विभिन्न श्रमिक संगठनों की सक्रिय भागीदारी रही है। जनभागीदारी के माध्यम से समुदाय में टीबी के संभावित मामलों (टीबी संदिग्धों) की प्रारंभिक पहचान संभव होती है और उन्हें समय पर जांच एवं उपचार से जोड़ा जा सकता है।

इसके साथ ही, ये गतिविधियां टीबी के प्रति जागरूकता बढ़ाने, भ्रांतियों और भेदभाव को कम करने तथा समुदाय में सकारात्मक व्यवहार परिवर्तन को बढ़ावा देने में भी सहायक हैं। टीबी चैंपियनों की सहभागिता से आयोजित जन आरोग्य समिति/रोगी सहायता समूह बैठकों के माध्यम से टीबी से प्रभावित व्यक्तियों को आत्मविश्वास मिलता है और वे उपचार के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण विकसित करते हैं।

इसके अतिरिक्त, सामुदायिक सहभागिता से पोषण सहायता के लिए पोषण पोटली प्रदान करने में मदद मिलती है, जिससे उपचार प्राप्त कर रहे टीबी रोगियों को बेहतर पोषण और सहयोग मिल सके।

टीबी प्रिवेंटिव ट्रीटमेंट : संक्रमण से बचाव की महत्वपूर्ण पहल

टीबी प्रिवेंटिव ट्रीटमेंट (टीपीटी) राष्ट्रीय क्षय रोग उन्मूलन कार्यक्रम (NTEP) का एक प्रमुख घटक है, जिसका उद्देश्य टीबी की रोकथाम पर विशेष ध्यान देना है। इस उपचार का लक्ष्य टीबी संक्रमण को सक्रिय बीमारी में बदलने से रोकना और समुदाय में इसके प्रसार के जोखिम को कम करना है।

टीबी रोगियों के घर के नजदीकी संपर्क (हाउसहोल्ड कॉन्टैक्ट्स), 5 वर्ष से कम आयु के बच्चे तथा एचआईवी जैसे प्रतिरक्षा-क्षीण रोगों से ग्रसित व्यक्ति टीबी संक्रमण के उच्च जोखिम में होते हैं। इसलिए यह आवश्यक है कि दवा-संवेदनशील (डीएस) टीबी रोगियों के संपर्क में रहने वाले परिवार के सदस्यों तथा एचआईवी संक्रमित व्यक्तियों (पीएलएचआईवी) को टीबी की सक्रिय बीमारी की जांच के उपरांत टीपीटी प्रदान किया जाए।

यदि किसी व्यक्ति में लक्षण हों, तो एक्स-रे और नाट जांच के माध्यम से सक्रिय टीबी की पुष्टि की जाती है। यदि टीबी की पुष्टि नहीं होती है, तो टीबी मरीजों के संपर्क में रह रहे व्यक्तियों को टीपीटी दिया जाता है।